

वैतालपचीसी ॥

हा मैं हूँ राजा विक्रम औ अपने शहर में जाता हूँ तू
 तेन जो मुझे रोकता है तब देव बोला कि मुझे दे-
 ताओं ने इस शहर की रखवाली को भेजा है जो तुम
 तब राजा विक्रम हो तो पहिले मुझसे लड़ो पीछे श-
 हर में जाओ इस बात को सुनतेही राजा ने चरना काछ
 तर उस देव को ललकारा फिर वह देव भी उनके स-
 मुख हुआ लज्जाई हो ने लगी निदान राजा ने देव
 को पछाड़ उसकी छाती पर चढ़ बैठा । तब उसने
 कहा ऐ राजा तूने मुझे पछाड़ा लेकिन मैं तुम्हें जी-
 दान देता हूँ तबतो राजा ने हँस कर कहा तू दीवा-
 ना हुआ है किसको जी दान देता है मैं चाहूँ तो
 तुम्हें मार डालूँ तू मुझे जीदान क्या देगा तब वह
 राजासे बोला कि ऐ राजा मैं तुम्हें कालसे वचाता हूँ प-
 हले मेरी एक बात सुन फिर वे परवाह तमास दुनि-
 यां का राज कर । आखिर राजाने उसे छेताये दिया
 और उसकी बात दिल देके सन्ने लगा पछि वह
 पक्ष उसे कहा कि इस शहर में चन्द्रभान नहीं ने लगा
 दाता था इतिफाकान् एक बही है जो राजा
 को देखता कथान है मिन्दः हूँ अफ

। वैतालपची

दृष्ट में उलटा लटका हुआ है और धुवां पी पी कर
 रहता है न किसी से कुछ लेता है न बात करता है ।
 उस का यह हाल देख राजा ने अपने घर आ सभा में
 बैठ कर यह कहा जो कोई उस तपस्वी को लावे वह
 लाख रुपैया पावे इस बात को सुन कर एकवेश्या ने
 राजा के पास आ यह अर्ज की अगर महाराज को
 आज्ञा पाऊं तो उसी तपस्वी से एक लड़का जन्माय
 उसी के कांधे पर चढ़ा कर लेआऊँ इस बात के सुनने
 से राजा को अचंभा हुआ और उस वेश्या को तपस्वी
 के लाने के वास्ते बीड़ा देकर रखसत किया । यह उस
 वन में गई और योगी के मकान पर पहुंची देखती क्या
 है कि वह योगी सच मुच उलटा लटक रहा है न कुछ
 खाता न पीता है और सूख रहा है गरज उस वेश्याने
 हलवा उस तपस्वी के मुँह में दिया उसे मीठा र
 जो वह उसे चाट गया फिर उस वेश्या ने औप

। इसी तरह से दो रोज तक हलवा

के खाने से एक धूवत उसे हुई तब

से नीचे उतर उससे पूछा तू

वेश्या ने कहा मैं देवकन्या हूँ

॥ वैतालपचीसी

लोक में तपस्या करती थी अब इस वन में आई हूँ फिर उस तपस्वी ने कहा तुम्हारी मढ़ी कहां है हमें दिखाओ तब वह वेश्या उस तपस्वी को अपनी मढ़ी में ला कर घट रस भोजन करवाने लगी तो तपस्वी ने धुआं पीना छोड़ दिया और हररोज खाना खाने पानी पीने लगा निदान कामदेव ने उसे सताया फिर तपस्वी ने उससे भोग किया योग खोया और वेश्या को गर्भ रहा वक्त मोक्षयन में लड़का पैदा हुआ । जब कई एक महीने का हुआ तब उस रंडी ने तपस्वी से कहा कि गोसाई जी अब चलकर तीर्थ यात्रा कीजिये जिससे शरीर के सब पाप कटें ऐसी बातें कर उसे भुलाय लड़का उसके कांधे पर चढ़ाय राजा की मजलिस को चली कि जहां से यह उस बातका बीड़ा उठा कर आई थी । जिसवक्त राजा के साहने पहुंची राजा उसको दूर से पहचान और लड़के को उस तपस्वी के कांधे पर देख यह मजलिस से कहने लगा देखो तो यह वेश्या है जो योगी के खेने को गई थी उन्होंने ने लगा की कि महाराज सच फरमाते हो यह वेश्या के रोज मुलाहिजा फरमाईये कि जो २ बात हरमिन्दः हूँ भूष